नवरात्र/दुर्गा पूजन

नवरात्र का पर्व एक वर्ष में दो बार मनाया जाता है।

पहला नवरात्र पर्व चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तिथि तक मनाया जाता है। चैत्र मास के इस नवरात्र पर्व को वासंतिक नवरात्र पर्व भी कहा जाता है।

दूसरा नवरात्र पर्व आश्विन मास की शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तिथि तक मनाया जाता है। आश्विन मास के इस नवरात्र पर्व को शारदीय नवरात्र पर्व भी कहा जाता है।

आश्विन मास में मनाये जाने वाले शारदीय पर्व का शास्त्रों के अनुसार अधिक महत्त्वपूर्ण बताया गया है। **नवरात्र के 9 दिनों में देवी भगवती माँ के नौ रूपों की पूजा की जाती है।**

शक्ति रूपी दे(वी ने महिषासुर नामक दैत्या(असुर) के साथ नौ दिनों तक भयानक युद्ध किया था और दसवें दिन शक्ति रूपी देवी माँ उस असुर को मारने में सफल हुई थी।

अदम्य शक्ति रूपी देवी माँ ने असुरों का संहार करने के लिए रौद्र रूप धारण किया था। इसलिए नवरात्रों को शक्ति पर्व के रूप में मनाया जाता है।

ग्रन्थों के अनुसार माँ भगवती को प्रसन्न करने के लिए कुमारी कन्याओं का पूजन किया जाता है। उन्हें स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन करवाया जाता है। भोजन के साथ ही उन्हें फल, खिलौनें, वस्त्र, शिंगार का सामान, नैवेध(प्रसाद) और दान–दक्षिणा आदि अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार देना चाहिए।

देवी माँ ने असुरों के संहार के लिए देवों के आह्वान पर अपने नौ रूप उत्पन्न करके असुरों का वध किया था। इसलिए नवरात्रों में माँ के नौ रूपों की पूजा की जाती है। नवरात्र के नौ दिनों में देवी भगवती माँ के नौ रूप–

1. शैलपुत्री
2. ब्रह्मचारिणी
3. चन्द्रघण्टा
4. कुष्माण्डा
5. स्कंदमाता
6. कात्यायनी
7. कालरात्रि
8. महागौरी
9. सिद्धिदात्री

पूजा–अराधना से प्रसन्न होकर माँ भगवती भक्त को धन–धान्य, सुख–समृद्धि, सम्पति–सन्तति, यश, विद्या प्रदान करती है।

माँ दुर्गा शत्रुओं का दमन कर, विघ्न–बाधा दूर कर, भय–चिन्ता का नाश कर, बुरे स्वप्न समाप्त कर, दुःखदायी समय से निकालकर अरोग्य और शक्ति भरपूर जीवन प्रदान करती है।

महामाया दुर्गा ने नौ रूप धारण करके नौ दिनों में महिषासुर, शुभ–निशुभ, मधु–कैटभ, चण्ड–मुण्ड, धुम्रलोचन, रक्तबीज आदि तामसिक असुरों का वध किया था।

इसलिए नवरात्र पर्व में शक्ति की अराधना की जाती है।

नवरात्र पर्व का पहला दिन

नवरात्र पर्व के प्रतिपदा के पहले दिन प्रातः काल नित्यकर्म, स्नान आदि से निवृत होकर नवरात्र पूजा का संकल्प करें।

प्रथम पूज्य गणपति जी की पूजा करके माँ दुर्गा की विधिवत पूजा करें।

सबसे पहले भूमि अथवा लकड़ी की चौंकी अथवा मेज के ऊपर साफ, सुन्दर और नवीन वस्त्र विछाएं। चौंकी का मुख पूर्व अथवा पश्चिम दिशा की ओर करें।

चौकी के ऊपर फूल, अक्षत(साबुत चावल) विछा कर श्री गणेश जी और माँ भगवती की प्रतिमा स्थापित करें।

एक मिट्टी का कलश अथवा धातु के कलश में जल भरकर आम अथवा हरे पत्ते कलश के किनारों पर रखें और उसके ऊपर दुर्वा(हरी घास) डाल दें। कलश को मौली अथवा सूत से बाँध दें।

कलश के ऊपर पानी वाला नारियल मौली अथवा माता की लाल चुनरी बाँध कर रखें।

एक बड़े और चौड़े मिट्टी के वर्तन में काली मिट्टी भरें। काली मिट्टी न मिलने पर साफ अन्य मिट्टी अथवा खेत से लाई हुई मिट्टी भी भर सकते हैं।

उस मिट्टी में जौं की खेतरी बोएं। इसको माता की खेतरी कहते हैं। खेतरी को दशमी/दशहरे वाले दिन काटा जाता है।

कलश, नारियल और सभी प्रतिमाओं को चन्दन/रौली/केसर/हल्दी आदि से तिलक लगाएं।

श्री गणेश जी को दुर्वा का हार और माँ भगवती को फूलों का हार और लाल चुंनरी ओढाएं(चढ़ाएं)।

पास में देसी घी की जोत/दीपक जलाएं।

श्री गणेज जी और माँ भगवती का आह्ववान करें।

अब विधिवत पूजा कर माँ भगवती को प्रसाद(वर्फी, फल, मेवे आदि) अर्पण कर आरती करें। बाद में खुद भी प्रसाद ग्रहण करें और घर के दूसरें सभी सदस्यों को प्रसाद बाँटें।